NH Debate - 31

"पाश्चात्य सभ्यता ने हमारी सभ्यता को रौंदा है" ऐसा कहना अपने आपको पिछड़ा मानने जैसा है

आजकल दो केसों *(आरुषि हॉनर किल्लिंग एवं तरुण तेजपाल काण्ड)* की चर्चा पर सभ्यता और मानवता के प्रहरी सब-कुछ पाश्चात्यता पर मंढ के फिर वही भारत की सदियों पुरानी "पल्ला झाड़" संकृति की रटी-रटाई परिपाटी पे चलते हुए अमादा हैं कि कहीं कोई इन हॉनर किल्लिंग और छेड़छाड़ की बहती आंधी के प्रभाव में आ के उनकी "पल्ला झाड़" संस्कृति को ठेंस ना पहुंचा जाए|

हमारी संस्कृति को किसी विदेशी या पश्चिमी सभ्यता ने नहीं रौंदा, यह पहले से ही रौंदी हुई है| बस पुराने वक्त और आज के वक्त में फर्क सिर्फ इतना है कि पुराणों-ग्रंथों की रम्भा-उर्वशी-मेनका जैसी अप्सराएं जो पहले वनों में ऋषियों-राजाओं को रिझाया करती थी *(कहना नहीं भूलूंगा कि गरीब तबके वालियां मंदिरों में देवीदासियां बना करती थी या बनने को विवश की जाती थी);* खैर तो अब वो रम्भाएं और मेनकाएं वहाँ से निकल कर रुपहले परदे पर आ गईं हैं|

इसलिए जो इनको हीरो-हेरोइन बना के पूजने और फेन बनने लगे हैं उनको खुद को रोक के सोचना होगा कि वो परदे पर मेनका-उर्वशी बनती हैं तो वो समाज का आदर्श बनने के लिए नहीं अपितु अभिनेत्री बनने के लिए, आजीविका कमाने के लिए| अब पुराने जमाने के स्वर्ग वाले इंद्र देवता तो हैं नहीं कि राजा विश्वामित्र की तपस्या भंग करने हेतु मेनका मिशन को ऊपर बैठे ही फाइनेंस कर देंगे| आज की मेनकाओं को तपस्या भंग करने के साथ-साथ पैसा भी कमाना होता है|

इसलिए वो समाज का आदर्श हैं या नहीं इसका अवलोकन उनके रुपहले परदे की जिंदगी से नहीं अपितु उनकी सामाजिक और पारिवारिक जिंदगी में वो सामाजिक मान्यताओं और संस्कृति के सञ्चालन और संयोजन के प्रति कितनी संवेनदशील है, से करेंगे तो अक्ल में कंगाली नहीं आएगी|

जिस देश में पहले से ही कामसूत्र, देवदासी जैसी चीजें प्रचलित रही हों, भला उस देश को विश्व की और कोई सभ्यता बिगाड़ सकती है? ऐसा कहने वाले खुद को पश्चिम वालों से कमतर आंकते हैं और अपने आपको गंवार दिखाना चाहते हैं; कि पाश्चात्यता आने से पहले तो हमारे यहाँ इंसानों को प्यार-प्रेम करना आता ही नहीं था बस पाश्चात्य सभ्यता रुपी देवी ने ही सब-कुछ सिखाया है|

बजाये इसके इस पर विचार करना चाहिए कि जो अप्सराएं पहले वनों तक सिमित होती थी अब वो जगह-जगह फ़ैल गई हैं और साथ ही उनको फैलाने वाले भी, सो उनका क्या किया जाए? पहले जहां देवदासियां मंदिरों के जरिये विशिष्ट एवं अति-विशिष्ट को ही उपलब्ध होती थी वो आज जन-जन को मिलने लगी हैं या हासिल की जाने लगी हैं, उसका क्या किया जाए?

अन्यथा बिल्ली को देखकर कबूतर की तरह आँखें मूँद के अपने आसपास हो रहे इन बदलावों को अनदेखा कर पाश्चात्यता पर मंढ़ते रहेंगे तो हो लिया कल्याण| ऐसे तो लिंग असमानता और पुरुष प्रधानता को ही बढ़ावा मिलता रहेगा|

Phool Kumar Malik

Nidana Heights

Dated: 27/11/2013